|| चंद्र दर्शन व्रत कथा ||

कब और कैसे करें चंद्र दर्शन

PDF Created By : www.janbhakti.in

|| चंद्र दर्शन व्रत कथा ||

चंद्र दर्शन (Chandra Darshan) की पौराणिक कथा

पौराणिक कथाओं के अनुसार एक दिन भगवान गणेश (Lord Ganesh) अपनी मूषक की सवारी के साथ भ्रमण कर रहे थे, मूषक की अतरंगी चाल ढाल के चलते भगवान गणेश जमीन पर गिर पड़े।

हालांकि यह एक मामूली घटना थी लेकिन भगवान गणेश (Lord Ganesh) को इस तरह से गिरते हुए देख चंद्रमा को हंसी आ गई चंद्रमा की इस हंसी पर भगवान गणेश अत्यधिक क्रोधित हो पड़े। क्रोध में भगवान गणेश ने चंद्रमा को श्राप दे दिया मैं और श्राप देते हुए भगवान गणेश ने कहा कि 'आज के बाद तुम्हें कोई भी व्यक्ति देखना पसंद नहीं करेगा और तुम अपनी इस चमक- दमक को ही खो बैठोगे' साथ ही भगवान गणेश ने यह भी कहा कि 'अगर किसी ने तुम्हें देखा भी तो वह व्यक्ति कलंकित हो जाएगा और झूठे आरोपों में भी फंस जाएगा'।

PDF Created By : www.janbhakti.in

|| चंद्र दर्शन व्रत कथा ||

चंद्रमा भगवान गणेश के दिए श्राप से अत्यन्त दुखी हो गए और सभी देवताओं से माफ़ी मांगते हुए गुहार लगाई। चंद्रमा के आवाहन के बाद सभी देवताओं ने भगवान गणेश की पूजा कर चंद्र देव को दिए श्राप को वापस लेने का आग्रह किया। सभी देवताओं के आग्रह पर भगवान गणेश ने कहा, 'मैं अपना श्राप तो वापस नहीं ले सकता, लेकिन इसमें कुछ बदलाव कर सकता हूं। बदलाव करते हुए भगवान गणेश ने कहा कि इस श्राप को सिर्फ एक दिन के लिए ही मान्य होगा' और यह दिन गणेश चतुर्थी के नाम से जाना जाता है इस दिन हम भगवान गणेश जी की पूजा करते हैं और उनके लिए विशेष आयोजन भी रखते हैं।

इसीलिए गणेश चतुर्थी के दिन चंद्रमा का दर्शन करना अशुभ मानागया है। लेकिन अमावस्या के बाद नव चंद्रमा के दर्शन करना काफी अच्छा माना जाता है।

PDF Created By : www.janbhakti.in